WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-2 Issue-5
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(May 2025)

लोक नायक के रूप में श्रीराम के उदात्त चरित्र का अध्ययन

मनीषा शुक्ला
सहायक प्राध्यापक

शोध सार

गोस्वामी तुलसीदास जी मात्र एक भक्त कवि ही नहीं थे वरन एक महान द्रष्टा, मानवतावादी चिन्तक और मनीषी भी रहे है। तत्कालीन समाज स्थिति और अन्य चुनौतियों को देखते हुए गोस्वामी जी की दूरदर्शिता ने उन्हें ग्रन्थ के निर्माण की प्रेरणा दी जिसकी भाषा सामान्य जनता के पहुँच में हो। तुलसीदास का आविर्भाव जिस युग में हुआ और जो चुनौतियाँ उनके सामने थीं उस अन्ध युग को ऐसे आदर्श की आवश्यकता थी जो जन मन को छूकर अनुकरण करने के लिए प्रेरित करे, आवश्यकता थी ऐसे नायक की जो शाब्दिक उच्चारण के स्थान पर आचरण द्वारा आदर्श प्रस्तुत कर सके।

उदात्त मानवीय गुणों से जड़ा हुआ एक चरित्र है श्री रामचन्द्र जी का जो अपने आचरण से उन्हें प्रामाणिक भी करता है। व्यापक एवं सर्वग्राही दृष्टि से सम्पन्न तुलसीदास ने के कल्याण एवं उद्धार के लिए उच्चतर मूल्यों, शील, मर्यादा, करूणा, आदि से युक्त राम का आदर्श चरित्र जनता के समक्ष रखा। राम एक व्यक्ति चरित्र न होकर समाज नायक, लोक नायक हैं जिनके माध्यम से गोस्वामी तुलसीदास जी मानवीय गुणों का प्रक्षेपण किये हैं। मानस के राम उदार चेता महापुरुष है। उनके यहाँ विस्तार है, व्यापकता है, औदार्य है, प्रेम है, करूणा है, दया है, परोपकार है। मानवीय गुणों में कभी संकीर्णता नहीं होती वे व्यापक और शाश्वत होते हैं, उनका स्वरूप सार्वभौमिक होता है। गोस्वामी तुलसीदासजी राम के माध्यम से शौर्य, धैर्य, बल, विवेक, परोपकार, क्षमा, दया, समता, दान, संतोष, अहिंसा आदि सार्वभौम मानवीय गुणों का गुणगान किये हैं।

बीज शब्द

उद्देश्य, शील, मर्यादा, करूणा, मानवीय गुण, सार्वभौमिक।

भूमिका

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी क्षेत्र के अत्यन्त लोकप्रिय कवि है। उन्हें हिन्दी का जातीय कवि कहा जाता है। तुलसीदास का शील-निरूपण जीवन के विविध स्वरूपों और मनोदशाओं को प्रकट करता है। विद्वानों द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित अनेक ग्रंथों की खोज की गई है, उसमें कितने ग्रन्थ प्रामाणिक है और कितने अप्रमाणिक, इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। तुलसीदास जी ने स्वयं अपनी रचनाओं के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण कहीं नहीं दिया है। तुलसी ग्रन्थावली में तुलसीदासजी के 12 ग्रन्थों को ही विद्वानों के अनुसार प्रमाणिक स्वीकार किया गया है।

गोस्वामी तुलसीदासजी राम के माध्यम से शौर्य, धैर्य, बल, विवेक, परोपकार, क्षमा, दया, समता, दान, संतोष, अहिंसा आदि मानवीय गुणों का गुणगान करते हैं। तुलसी की सामाजिक चेतना अपने नायक एवं अन्य पात्रों के माध्यम से मानवीय गुणों की स्थापना में सदैव सजग एवं सावधान रही है। राम तो मानवीय गुणों की स्थापना में सदैव सजग एवं अनुशाषित रहे है। राम तो मानवीय गुणों के तो पुंज हैं ही पर रामचरित मानस के अन्य पात्र भी अपने को मानवीय गुणें के अनुरूप जीते हैं। राम को केन्द्र बिन्दु मानकर अन्य पात्रों को साथ लेते हुए तुलसी ने मानवीय गुणों का प्रतिपादन किया तथा उन्हें परिभाषित किया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन के लक्ष्य एवं उद्देश्य यह है कि भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में तुलसीदास द्वारा सृजित रामचरित मानस में राम के मानवीय चरित्र का उल्लेख कर वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।

शोध पद्धति

इस शोधपत्र लिखने के लिए विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध में द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है,जिसमें संत शिरोमणि तुलसीदास जी द्वारा रचित ग्रंथ उनके साहित्य और उन से संबंधित आलोचनात्मक पुस्तकें समाहित है।

शोध विस्तार

श्री राम का चरित्र उदात्त है क्योंकि वे सत्य, धर्म, न्याय, साहस, धैर्य, करुणा, क्षमा, और प्रेम जैसे गुणों का प्रतीक हैं। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा, और मित्र के रूप में जाने जाते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा मानवीय गुणों के सन्दर्भ में कही बातें निरंतर प्रासंगिक कही जा सकती हैं। यदि उस युग में तुलसी साहित्य की उपयोगिता और प्रासंगिकता थी तो आज उससे कहीं अधिक है। गोस्वामी तुलसीदास जी को सोलहवीं सदी और आज की बौद्धिकता, आधुनिकता तथा प्रगति का दावा करने वाली सदी में कोई अन्तर नहीं पड़ा है यदि अन्तर पड़ा है तो मानवीय गुणों की गिरावट की ओर। आज समाज को तुलसी साहित्य के चरित्रों की विशिष्टताओं, पिता की आज्ञा का सत्यता से पालन करना,भाई-भाई के प्रति प्रेम, सेवा, त्याग, सत्ता के प्रति त्याग एवं वैराग्य, निम्न वर्ग के प्रति स्नेह, दया, शरणागत के प्रति दया,मैत्री एवं क्षमा, निर्बलों के प्रति परोपकार, सत्य,अहिंसा, दान,शील,धैर्य आदि को हृदय से अपनाने की आवश्यकता है।

आदिकवि वाल्मीकि के राम भगवान न होकर महापुरूष है, जबकि तुलसीने ईश्वर का महिमा मंडित रूप प्रदान कर राम को हमेशा के लिए जीवन और साहित्य का अनिवार्य अंग बना दिया है। तुलसीदास "मानस" में लिखते हैं-

"एक अनीह अरूप अनामा।
जब सच्चिदानंद परधामा ।
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना।
ते हिं धरि देह चरित कृत नाना।"

"गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम के चरित्र का निर्माण करके अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष की प्रेरणा दी। उन्होंने मानवीय गुणों एवं मर्यादा पालन पर बल दिया तथा प्रत्येक अमानवीय कृत्य व विचारधारा के विरूद्ध आवाज उठाने का आह्वान किया। आज समाज को पशुता के धरातल से ऊपर उठाने के लिए गोस्वामी तुलसीदास को उजागर एवं जाग्रत करने की आवश्यकता है। तुलसी का काव्य भरतीय जनमानस के लिये धरोहर 'स्वरूप अनमोल हैं। 'रामचरितमानस' अपने कृतित्व के रूप में उनकी 'अमर' कृति है। लोक कल्याणकारी कथा के रूप में राम चरित्र-गाथा का बखान

करने वाली यह रचना अपने रचनाकाल के 500 वर्षों के पश्चात् भी सतत् लोकप्रिय बनी हुई है। निश्चय ही यह साधारण कवि की साधारण रचना नहीं हो सकती।

तुलसीदास ने लोकमंगल की कामना से प्रेरित हो 'सर्वहिताय सर्वसुखाय' राम कथा का प्रचार किया। तुलसी के राम घट घटवासी हैं, भवसागर से पार उतारने वाले हैं वे मर्यादा पुरुषोत्तम है, धर्म के मार्ग पर चलते हुए समाज के कल्याण के लिये सदैव तत्पर रहने वाले हैं, तुलसी का सम्पूर्ण काव्य राममय है!

संप्रेषण के कारणों पर भी विचार किया गया हैं सगुण साकार रूप में राम और रामभक्त प्रेमियों को भक्ति की रस-गंगा में आनन्द प्रदान कराते हुए तुलसी ने साधन और साध्य की एकरूपता पर बल दिया है। राम अलौकिक शक्ति के पर्याय हैं। दिव्य शक्ति सम्पन्न राम का पृथ्वी पर अवतरण प्रयोजन सिद्ध हैं। संतों और पवित्र हृदयवालों की रक्षा के निमित्त अवतरित होकर वे कौतुक लीलाएं करते हैं, कौतुक उन्हें प्रिय है तुलसीदास अनेक, स्थलों पर उनके लिये 'कौतुक निध कृपाल भगवाना' का उल्लेख करते हैं। सीता स्वयंवर के लिये धनुष भंग की रचना उनके कौतुक प्रेम को दर्शाती है।

लक्ष्मण धनुष भंग में सक्षम होते हुए भी राम से निवेदन करते हैं। "कौतुक करो बिलोकिअ सोउफ।" अर्थात खेल तमाशा दिखाना हो मैं भी दिखा सकता हूं पर इस प्रतिज्ञा को पूरा करना आपके प्रण के लिए अनिवार्य है सो आप कौतुक करें।" राम परमात्मा के स्वरूप है, वे अलौकिक क्रियाएं करने में समर्थ हैं पर रामचरितमानस के राम साधारण मनुष्यों की भांति लीलाएं भी करते हैं- वे संकोची हैं, गुरुवन्दन कर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान करते हैं, माता पिता के लिये आज्ञाकारी पुत्र हैं, अनुजों के लिये सहोदर भ्राता हैं, एकव्रतधारी पति हैं, पत्नी वियोग में विलाप करते हैं और वानर-मित्र बन ईश्वर और भक्त का आदर्श स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। राम लोक रंजक मर्यादा पुरुषोत्तम रूप का प्रस्तुत करने में तुलसी का कोई सानी नहीं।

"भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किए चरित्र पावन परम, प्रकृत नर अनुरूप।।"

अर्थात् राम अपनी भक्ति-प्रदर्शन के लिये भक्तों की रक्षा के लिए न जाने किस किस रूप में अवतरित होते हैं उनका चरित संसार को सुख प्रदान करने वाला है, कलियुग के समस्त दोषों से मुक्ति प्रदान करने वाला है। स्नेह आत्मीयता, भक्त वत्सलता, सद्भाव और प्रेम की अद्भुत मिसाल

हैं - राम', प्रेम उनसे जुड़ने और जोड़ने का साधन है। राममय बनने और उनके महात्म्य को समझने के लिये-

"रामहिं राम पिआरा जानि लेउ जो जान निहारा।"

जो राम कथा सुनता है, पढ़ता है, सुनाता है वह स्वयं राममय हो जाता है। रामकथा गायन के माध्यम से राम नाम सुमिरन करने की एक लम्बी परम्परा रही है। सदियों से भारतीय जनसमाज राम कथा के सर्वोपरि आधार स्तम्भ रामचरितमानस और उसके रचनाकार तुलसीदास से सम्बद्ध रहा है। विदेशों में प्रवासी भारतीयों ने भी इस क्रम को आज तक बनाए रखा हैं पारिवारिक उत्सव हो मांगलिक कारज, व्यापार वृद्धि, नए कार्य का श्री गणेश राम चरितमानस अभिन्न रूप से चिरसाथी के रूप में सर्वप्रथम उपस्थित रहा है। गांव- देहात में राम कथा वाचन की दिल को छू लेने वाली प्रस्तुतियाँ हैं और ग्रामीण समाज रामचरितमानस के माध्यम से उनका चिर सिहचर! स्वर लहरियों, स्थानीय लोकधुनों अपनी रुचि-वैशिष्ट्य प्रस्तुतियों से राम कथा कहने-बाँचने और उस असीम सुख से लाभान्वित होने के आपने अपने अंदाज हैं। इसे तुलसी की विशिष्टता ही माना जा सकता है-

"रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट संचारि।"

अर्थात- रामकथा का सानिध्य गंगा स्नान तुल्य है। यह शारीरिक मानसिक एवं आचार-विचार परिष्कार की एक व्यवस्थित योजना प्रस्तुत कर सात्विक भावों की ओर प्रेरित करती है। इस दृष्टि से आज भी इसका महत्व कम नहीं हुआ है- "प्रीति राम सो नीति पथ चलिय राम रस प्रतीति।" आज भी शाश्वत है। अकंठ डूबे भोग विलासी मन को श्रद्धा प्रेम और भक्ति के माध्यम से परिष्कृत करने में तुलसी का भक्ति काव्य आज भी प्रासंगिक कहा जा सकता है। बुद्धिजीवी मन तर्कों वितर्कों से जीवन की नयी परिपाटी गढ़ने में व्यस्त है, वैज्ञानिक पुष्टि से जीवन संचालन करने को उद्यत है। न चाहते हुए भी सांसारिक सुखों की श्रेष्ठता से अभिभूत है, अनंत विषय विकारों से ग्रस्त है और स्वाभाविक जीवन की परिपाटी को विस्मृत कर रहा है। मानव व्यवहार, जीवन शैली, सामाजिक - जीवन की व्याख्या ओर पारस्परिक सम्बन्धों का अनुशीलन जो तुलसी ने रामचरितमानस के माध्यम से विवेचित किया है वह अनुकरणीय है - इनमें वर्णित विविध विषयक सूक्ति वाक्य श्रेष्ठ जीवन का आधार बन सकते हैं।

'हरि भक्ति रसामृत सिन्धु' कहते हुए तुलसी ने बार बार राम शरण जाने का अनुमोदन किया हैं 'मंत्र तीर्थ ब्राह्मण, देव, औषधि या और गुरु में जैसी भावना होगी वैसा ही फल प्राप्त होगा- इस भाव से तुलसी ने भक्तजनों के विवेक पर राम-सुमिरन का निर्णय छोड़ दिया हैं।" आधुनिक जीव अपनी सुविधानुसार, विवेकानुसार जगत, माया, ब्रह्म मोक्ष, द्वैत-अद्वैत भावों की किस प्रकार व्याख्या करता है यह उस पर निर्भर करता है। साधन स्पष्ट है- निष्काम प्रेम, राम के प्रति समर्पण भाव विषयी मन के भक्ति में लीन होने के सब मार्ग सुझाए गए हैं। सामाजिक राजैनतिक, धार्मिक अनुशीलन के साथ- साथ उनमें प्रगतिशील तत्वों का समावेश चमत्कृत करने वाला है। सामाजिक प्रतिबद्धता और मूल्यबोध की प्रवृत्ति तुलसी व उनके भक्ति काव्य को उदात्त स्वरूप प्रदान करती है। सामाजिक संस्कारों को जागृत करने, कुमति पर सुमति की विजय दर्शाना, कर्तव्यबोध कर्म की प्रेरणा, देना, धर्म के मार्ग पर प्रशस्त करना ही इसका लक्ष्य है-

"जहां सुमति तहं सम्मति नाना।
जहं कुमति तहं विपति निधाना।।"

इसीलिये राम "मंगल भवन अमंगलहारी" कहे गए हैं। उनका गान पाप का नाशक और शौर्य शक्ति की स्थापना का काव्य है जो संघर्ष की प्रबल प्रेरणा से अनुप्राणित है। विषय परिस्थितियों में कुंठाओं, तनाव पूर्ण माहौल में सार्थक जीवन कैसे जिया जाए रामचरितमानस इसका प्रेरक साहित्य हैं। प्रकृति और जीवन की समरसता को स्थापित करने का आधार हैं राम ! लोक चेतना उन्मुख करने में इसका कोई सानी नहीं। रामकथा को सम्पूर्ण समाज के लिये ग्राह्य बना कर तुलसी अमर हो गए। स्वान्त सुखाय से समष्टि तक विस्तार देते हुए तुलसी ने इसे 'बहता नीर' बनाया है। युगीन संदर्भों से जुड़ते हुए रामकथा सदियों तक अमर रह सकती है यदि सही प्रकार से भावी पीढ़ियों तक हम इसका महत्व प्रतिपादित कर सकें तो निश्चय ही हम आगामी पीढ़ियों को राम, रामकथा के पात्रों, राम चरित का अनुशीलन करने की प्रेरणा देकर भारत की सनातन संस्कृति और सभ्यता की सुरक्षा कर सकते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार देखते हैं कि तुलसी साहित्य में सार्वभौम मानवीय गुणों की सम्यक प्रतिष्ठा की गयी है। उनके प्रतिनिधि पात्र सत्य, करूणा, प्रेम, मैत्री, परोपकार, क्षमा, दया एवं न्याय से साक्षात

प्रतिमूर्ति हैं। तुलसी साहित्य के प्रमुख पात्र मनसा,वाचा एवं कर्मणा सार्वभौम मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में संलग्न है। श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, जटायु, निषादराज, शबरी, केवट एवं अंगद आदि अनेक ऐसे महान पात्र है, जिनके कृत्य सार्वभौम मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा की दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके द्वारा स्थापित मानवीय गुणों द्वारा न केवल भारत देश के नागरिकों को अपितु सम्पूर्ण विश्व का कल्याण निहित है। तुलसीदास रचित काव्य भारतीय संस्कृति का दर्पण है। श्रीरामचरित मानस भारतीय धर्म एवं संस्कृति की पावन गंगा है। यह एक ऐसी महान रचना है जिसमें कदम-कदम पर मानवीय गुणों को किया गया है। मानस मानवतावाद, साम्प्रदायिक सद्भाव, सांस्कृतिक एकता धार्मिक सहिष्णुता और भाईचारे का संदेश देने वाला महान ग्रंथ है। तुलसीदास मानवतावादी कवि थे इसलिए उनकी दृष्टि एकात्म दर्शन समन्वित है। संत स्वभाव के तुलसी को किसी से घृणा नहीं, किसी के प्रति उपेक्षा का भाव नहीं है।

संदर्भ सूची

1. मध्यकालीन हिन्दी कविता/ सं रोहित उपाध्याय और डॉ. हसमुख बारोट/ पृ.64
2. तुलसी मानस संदर्भ/सं.डॉ. रामस्वरूप आर्य/पृ.254.
3. गोस्वामी तुलसीदास/आचार्य रामचन्द्र शुक्ल/पृ.96
4. तुलसी साहित्य के सर्वोत्तम अंश/ डॉ. रामप्रसाद मिश्र/ पृ.38.
5. तुलसी साहित्य के सामाजिक मूल्य/राम विलास शर्मा/पृ.75.
6. तुलसी साहित्य के सामाजिक मूल्य/राम विलास शर्मा/पृ.79.